Journal of Integrative Science and Societal Impact
January-June 2026 2(1)
https://jissi.org

Original Article

A STUDY OF THE IMPACT OF THE MUGHAL-ERA EDUCATION SYSTEM ON INDIAN CULTURE

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव का अध्ययन

Dr. Ravindra Kumar [1*]
[1] Principal Teacher Training College, Industrial Area, Gaya (Bihar), India

ABSTRACT

English: The education system of the Mughal era constitutes a significant chapter in the medieval evolution of Indian history, profoundly influencing various facets of education, culture, language, literature, administration, and social life. Mughal rulers viewed education not only as a means to meet religious and administrative requirements but also as a vehicle for intellectual development. During this period, primary and higher education were systematically conducted through *Maktabs* and *Madrasas*, where subjects such as the Quran, Hadith, Arabic, Persian, logic, mathematics, astronomy, medicine, and literature were taught. The elevation of Persian to the status of the official state language, in particular, established its widespread influence across the spheres of education and administration. The Mughal education system also strengthened the spirit of cultural synthesis within Indian culture. Liberal rulers like Akbar encouraged dialogue among diverse religions and cultures and fostered the exchange of knowledge by commissioning the translation of Sanskrit texts into Persian. This process lent a new identity to India's cultural heritage and enabled integrated development in the fields of literature, art, architecture, and philosophy. Although the primary objective of education was religious and administrative training, the system nonetheless made a remarkable contribution to the development of knowledge, morality, discipline, and social values.

Hindi: मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था भारतीय इतिहास के मध्यकालीन विकास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने शिक्षा, संस्कृति, भाषा, साहित्य, प्रशासन तथा सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को गहराई से प्रभावित किया। मुगल शासकों ने शिक्षा को धार्मिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं के साथ-साथ बौद्धिक विकास का भी माध्यम माना। इस काल में मकतब एवं मदरसों के माध्यम से प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा का सुव्यवस्थित संचालन किया जाता था, जहाँ कुरआन, हदीस, अरबी, फारसी, तर्कशास्त्र, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा तथा साहित्य जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। विशेष रूप से फारसी भाषा को राजकीय भाषा का दर्जा मिलने से शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में इसका व्यापक प्रभाव स्थापित हुआ। मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक समन्वय की भावना को भी सुदृढ़ किया। अकबर जैसे उदारवादी शासकों ने विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों के बीच संवाद को प्रोत्साहित किया तथा संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाकर ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। इस प्रक्रिया से भारतीय सांस्कृतिक विरासत को नई पहचान मिली तथा साहित्य, कला, स्थापत्य और दर्शन के क्षेत्र में समन्वित विकास संभव हुआ। यद्यपि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण था, फिर भी इस व्यवस्था ने ज्ञान, नैतिकता, अनुशासन तथा सामाजिक मूल्यों के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Ravindra Kumar (chaudhary.ravi228@gmail.com)
Received: 26 April 2026; **Accepted:** 23 May 2026; **Published** 30 June 2026
DOI: 10.29121/JISSI.v2.i1.2026.88
Page Number: 281-286
Journal Title: Journal of Integrative Science and Societal Impact
Journal Abbreviation: J. Integr. Sci. Soc. Impact
Online ISSN: 3108-2165, **Print ISSN:** 3108-1959
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

Keywords: Mughal Education, Indian Culture, Maktab, Madrasa, Persian Language, Islamic Education, Cultural Integration, Knowledge Tradition, Medieval India, Education System, मुगलकालीन शिक्षा, भारतीय संस्कृति, मकतब, मदरसा, फारसी भाषा, इस्लामी शिक्षा, सांस्कृतिक समन्वय, ज्ञान परंपरा, मध्यकालीन भारत, शिक्षा व्यवस्था

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का इतिहास अत्यंत समृद्ध एवं बहुआयामी रहा है। वैदिक काल से प्रारंभ होकर बौद्ध, जैन, सल्तनत और मुगल काल तक शिक्षा की संरचना समयानुसार परिवर्तित होती रही तथा प्रत्येक युग ने अपनी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का विकास किया। मध्यकालीन भारत में मुगल साम्राज्य के उदय ने केवल राजनीतिक व्यवस्था को ही नहीं, बल्कि शिक्षा, साहित्य, भाषा, कला और संस्कृति को भी नई दिशा प्रदान की। मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था भारतीय इतिहास का ऐसा महत्वपूर्ण चरण है, जिसने भारतीय संस्कृति के विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से व्यापक योगदान दिया। मुगल शासकों ने शिक्षा को शासन व्यवस्था, धार्मिक जीवन तथा सामाजिक संगठन का आधार माना। इस काल में शिक्षा का संचालन मुख्यतः मकतबों एवं मदरसों के माध्यम से होता था। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जहाँ बालकों को कुरआन का अध्ययन, लेखन-कला, प्रारंभिक गणित तथा नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके पश्चात मदरसों में उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी, जहाँ अरबी एवं फारसी भाषाओं के साथ इस्लामी धर्मशास्त्र, तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा, इतिहास, साहित्य तथा प्रशासनिक विषयों का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल धार्मिक ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि योग्य प्रशासक, विद्वान, न्यायविद, लेखक एवं समाजोपयोगी नागरिक तैयार करना भी था।

मुगलकाल में फारसी भाषा को राजकीय भाषा के रूप में स्थापित किया गया, जिसके कारण शिक्षा, प्रशासन तथा साहित्य के क्षेत्र में इसका व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। फारसी भाषा के माध्यम से भारतीय साहित्य में नए विचारों, नई अभिव्यक्तियों तथा नवीन साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ। अनेक भारतीय विद्वानों ने फारसी भाषा में उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना की तथा अनेक संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद हुआ। विशेष रूप से सम्राट अकबर के शासनकाल में महाभारत, रामायण, योगवाशिष्ठ तथा उपनिषदों सहित अनेक भारतीय ग्रंथों का फारसी अनुवाद कराया गया। इससे विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के बीच संवाद स्थापित हुआ तथा भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना विकसित हुई।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता उसका संस्थागत स्वरूप था। अनेक मदरसों, पुस्तकालयों तथा विद्वत् केंद्रों की स्थापना की गई, जहाँ विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, भोजन तथा आवास जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती थीं। समृद्ध वर्ग, शासक तथा धार्मिक संस्थाएँ शिक्षा के संरक्षण एवं विकास में सक्रिय भूमिका निभाते थे। परिणामस्वरूप ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, इतिहास, कला तथा प्रशासनिक अध्ययन का उल्लेखनीय विस्तार हुआ। इस काल में पुस्तकों के लेखन, अनुवाद तथा संरक्षण की परंपरा ने ज्ञान के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति पर मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव अनेक स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। सांस्कृतिक दृष्टि से इस शिक्षा प्रणाली ने विविध धार्मिक समुदायों के मध्य संवाद एवं सहिष्णुता को प्रोत्साहित किया। यद्यपि शिक्षा का प्रमुख आधार इस्लामी परंपरा थी, फिर भी अनेक मुगल शासकों, विशेषकर अकबर, दारा शिकोह तथा कुछ अन्य विद्वानों ने भारतीय दर्शन, वेदांत एवं संस्कृत साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया। दारा शिकोह द्वारा उपनिषदों का फारसी अनुवाद भारतीय एवं इस्लामी बौद्धिक परंपराओं के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इस प्रकार शिक्षा केवल धार्मिक सीमाओं तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक समन्वय का माध्यम भी बनी।

भाषायी विकास की दृष्टि से भी मुगलकाल अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। फारसी, अरबी तथा स्थानीय भारतीय भाषाओं के परस्पर संपर्क से नई भाषाई अभिव्यक्तियों का विकास हुआ। इसी सांस्कृतिक वातावरण में उर्दू भाषा का क्रमिक विकास हुआ, जिसने भारतीय साहित्य एवं संस्कृति को नई दिशा प्रदान की। हिंदी, ब्रज, अवधी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं पर भी फारसी शब्दावली एवं साहित्यिक शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस भाषायी समन्वय ने भारतीय साहित्य को अधिक समृद्ध एवं व्यापक बनाया।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का प्रभाव प्रशासनिक क्षेत्र में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शिक्षित वर्ग को शासन, न्याय, वित्त, अभिलेख-लेखन तथा कूटनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। प्रशासनिक दक्षता, अभिलेखीय व्यवस्था तथा राजकीय दस्तावेजों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसने भारतीय प्रशासनिक परंपरा को अधिक व्यवस्थित एवं संगठित स्वरूप प्रदान किया।

सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से भी इस शिक्षा प्रणाली ने अनुशासन, नैतिकता, धार्मिक आस्था, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा बौद्धिक विकास जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित किया। यद्यपि शिक्षा का अवसर मुख्यतः पुरुषों एवं उच्च सामाजिक वर्गों तक सीमित था और महिलाओं तथा निम्न वर्गों की शिक्षा अपेक्षाकृत सीमित रही, फिर भी शाही परिवारों तथा कुछ विशिष्ट परिवारों की महिलाओं को शिक्षा प्रदान की जाती थी। गुलबदन बेगम, जहाँआरा बेगम तथा ज़ेबुन्निसा जैसी विदुषी महिलाओं ने साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था की कुछ सीमाएँ भी थीं। शिक्षा का प्रसार सार्वभौमिक नहीं था तथा इसका प्रमुख उद्देश्य धार्मिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। व्यावसायिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा अपेक्षाकृत सीमित थी। फिर भी इस व्यवस्था ने भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक समन्वय, भाषायी विकास, साहित्यिक समृद्धि तथा प्रशासनिक संगठन को स्थायी आधार प्रदान किया। वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक विविधता, बहुभाषिकता, ज्ञान-साझेदारी तथा समावेशी दृष्टिकोण जैसी अनेक अवधारणाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था में भी देखी जा सकती है।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य एवं स्वरूप

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक, नैतिक, बौद्धिक तथा प्रशासनिक दृष्टि से योग्य व्यक्तियों का निर्माण करना था। इस काल में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं माना जाता था, बल्कि इसे व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का माध्यम

भी समझा जाता था। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में इस्लामी धार्मिक सिद्धांतों, नैतिक मूल्यों, अनुशासन तथा सामाजिक आचरण का विकास किया जाता था। साथ ही प्रशासनिक कार्यों के लिए योग्य काज़ी, मुंशी, विद्वान, न्यायविद तथा राजकीय अधिकारी तैयार करना भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप मुख्यतः मकतब और मदरसों पर आधारित था। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र थे, जहाँ बच्चों को कुरआन का अध्ययन, लेखन, पठन तथा प्रारंभिक गणित की शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा के लिए मदरसों की व्यवस्था थी, जहाँ अरबी, फारसी, तफ़सीर, हदीस, फिक़्ह, तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा, इतिहास तथा साहित्य जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। फारसी भाषा को राजकीय संरक्षण प्राप्त होने के कारण उसका अध्ययन विशेष महत्व रखता था। शिक्षा का संचालन प्रायः मस्जिदों, मदरसों एवं शाही संरक्षण प्राप्त शिक्षण संस्थानों में होता था, जहाँ योग्य विद्वान शिक्षण कार्य करते थे। मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था धार्मिक मूल्यों, व्यावहारिक ज्ञान, प्रशासनिक दक्षता तथा सांस्कृतिक विकास के समन्वित स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती थी और मध्यकालीन भारतीय समाज की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी।

मकतब एवं मदरसा प्रणाली : संगठन एवं कार्यप्रणाली

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का आधार मुख्यतः मकतब एवं मदरसा संस्थाएँ थीं, जिनके माध्यम से प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा का व्यवस्थित संचालन किया जाता था। मकतब प्राथमिक शिक्षा के केंद्र होते थे, जो प्रायः मस्जिदों से संबद्ध या स्थानीय समुदाय के सहयोग से संचालित किए जाते थे। इनमें बालकों को कुरआन का पाठ, अरबी वर्णमाला, पठन-पाठन, लेखन-कला, सुलेख (कैलीग्राफी), प्रारंभिक गणित तथा नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। मकतबों का उद्देश्य विद्यार्थियों में धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ भाषा, अनुशासन और सामाजिक व्यवहार की प्रारंभिक समझ विकसित करना था। उच्च शिक्षा के लिए मदरसों की स्थापना की जाती थी, जिनका संचालन शासकों, अमीरों, जागीरदारों, धार्मिक संस्थाओं तथा दानदाताओं के आर्थिक सहयोग से होता था। मदरसों में योग्य विद्वानों और उलेमाओं द्वारा अरबी एवं फारसी भाषाओं के साथ-साथ कुरआन, हदीस, फिक़्ह (इस्लामी विधिशास्त्र), तफ़सीर, तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित, ज्योतिष, चिकित्सा, इतिहास, साहित्य तथा प्रशासनिक विषयों का अध्ययन कराया जाता था। अनेक प्रतिष्ठित मदरसों में विद्यार्थियों के लिए छात्रावास, पुस्तकालय, भोजन तथा छात्रवृत्ति जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती थीं, जिससे दूर-दराज़ के विद्यार्थी भी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

मकतब एवं मदरसा प्रणाली की कार्यप्रणाली गुरु-शिष्य संबंध, अनुशासन एवं प्रत्यक्ष शिक्षण पर आधारित थी। शिक्षण में व्याख्यान, पाठ का वाचन, कंठस्थ अध्ययन, प्रश्नोत्तर, चर्चा तथा ग्रंथों की व्याख्या जैसी विधियों का उपयोग किया जाता था। विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन नियमित मौखिक परीक्षण, पाठ की पुनरावृत्ति तथा विषय की व्यावहारिक समझ के आधार पर किया जाता था। शिक्षा पूर्ण होने पर योग्य विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र अथवा विद्वानों द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती थी, जिससे उन्हें प्रशासनिक, न्यायिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में कार्य करने का अवसर मिलता था।

मकतब एवं मदरसा प्रणाली ने मुगलकालीन भारत में ज्ञान के संरक्षण, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के प्रसार, प्रशासनिक दक्षता के विकास तथा सांस्कृतिक परंपराओं के संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह प्रणाली मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख आधारशिला थी और उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा बौद्धिक जीवन को दिशा प्रदान करने में प्रभावशाली सिद्ध हुई।

मुगलकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं प्रमुख शिक्षण विषय

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का पाठ्यक्रम धार्मिक, भाषायी, बौद्धिक तथा व्यावहारिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। इस काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को धार्मिक ज्ञान, नैतिक मूल्यों, प्रशासनिक दक्षता तथा बौद्धिक क्षमता से संपन्न बनाना था। प्रारंभिक स्तर पर मकतबों में विद्यार्थियों को कुरआन का पाठ, अरबी वर्णमाला, पठन-पाठन, लेखन-कला, सुलेख (कैलीग्राफी), प्रारंभिक अंकगणित तथा नैतिक शिक्षा का ज्ञान दिया जाता था। इस स्तर पर भाषा की शुद्धता, स्मरण शक्ति तथा अनुशासित जीवन पर विशेष बल दिया जाता था।

उच्च शिक्षा के लिए स्थापित मदरसों का पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत व्यापक एवं व्यवस्थित था। इसमें धार्मिक विषयों के अंतर्गत कुरआन, हदीस, तफ़सीर (कुरआन की व्याख्या), फिक़्ह (इस्लामी विधिशास्त्र), कलाम (धर्मदर्शन) तथा इस्लामी नैतिकता का अध्ययन कराया जाता था। इन विषयों का उद्देश्य विद्यार्थियों को धार्मिक सिद्धांतों, न्याय व्यवस्था तथा नैतिक जीवन के प्रति जागरूक बनाना था। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ अरबी एवं फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन भी कराया जाता था। अरबी भाषा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन के लिए आवश्यक मानी जाती थी, जबकि फारसी राजकीय भाषा होने के कारण प्रशासन, न्यायालय तथा साहित्य के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण थी।

मुगलकालीन पाठ्यक्रम में केवल धार्मिक विषय ही नहीं, बल्कि लौकिक एवं बौद्धिक विषयों को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। विद्यार्थियों को तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित, ज्यामिति, ज्योतिष, चिकित्सा (यूनानी चिकित्सा पद्धति), इतिहास, भूगोल, साहित्य, काव्यशास्त्र तथा पत्र-लेखन (मुंशीगिरी) का अध्ययन कराया जाता था। प्रशासनिक सेवाओं में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों के लिए अभिलेख-लेखन, राजकीय पत्राचार, लेखांकन तथा न्यायिक प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इससे वे शासन व्यवस्था में दक्षतापूर्वक कार्य करने के योग्य बनते थे। मुगल शासकों, विशेषकर अकबर के शासनकाल में शिक्षा के पाठ्यक्रम में अपेक्षाकृत उदार दृष्टिकोण अपनाया गया। संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवाद, भारतीय दर्शन, इतिहास तथा साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहन मिलने से पाठ्यक्रम अधिक समन्वित एवं बहुआयामी बना। इस प्रक्रिया ने विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के मध्य ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया तथा भारतीय संस्कृति में सांस्कृतिक समन्वय की भावना को सुदृढ़ किया।

यद्यपि मुगलकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम धार्मिक शिक्षा पर केंद्रित था, फिर भी उसमें ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, भाषा, दर्शन, चिकित्सा एवं प्रशासन जैसे विविध विषयों का समावेश था। इस व्यापक पाठ्यक्रम ने विद्वानों, न्यायविदों, प्रशासकों, साहित्यकारों तथा शिक्षकों की एक सशक्त परंपरा का निर्माण किया। मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय ज्ञान परंपरा, भाषायी विकास, साहित्यिक समृद्धि तथा प्रशासनिक संगठन को सुदृढ़ आधार प्रदान किया और भारतीय संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मुगलकालीन शिक्षण विधियाँ एवं मूल्यांकन प्रणाली

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण विधियाँ परंपरागत गुरु-शिष्य संबंध, धार्मिक अनुशासन तथा व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित थीं। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, बौद्धिक क्षमता, तर्कशक्ति, धार्मिक आस्था तथा प्रशासनिक दक्षता का विकास करना भी था। शिक्षण कार्य मुख्यतः मकतबों और मदरसों में योग्य उलेमा, मौलवी तथा विद्वानों द्वारा संचालित किया जाता था। शिक्षक विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एवं क्षमता के अनुसार शिक्षण प्रदान करते थे, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनती थी।

मुगलकालीन शिक्षण प्रणाली में व्याख्यान विधि, पाठ वाचन, कंठस्थ (स्मरण) विधि, प्रश्नोत्तर विधि, वाद-विवाद (मुबाहसा) तथा ग्रंथ-व्याख्या जैसी शिक्षण तकनीकों का व्यापक उपयोग किया जाता था। विद्यार्थी पहले पाठ को सुनते, फिर उसे दोहराते और अंततः उसे कंठस्थ कर उसके अर्थ एवं व्याख्या को समझते थे। धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में शुद्ध उच्चारण, व्याख्या तथा गहन चिंतन पर विशेष बल दिया जाता था। तर्कशास्त्र, दर्शन, गणित एवं विधिशास्त्र जैसे विषयों में विद्यार्थियों को विचार-विमर्श, तार्किक विश्लेषण तथा शास्त्रार्थ के माध्यम से शिक्षित किया जाता था। सुलेख (कैलीग्राफी), पत्र-लेखन तथा अभिलेख तैयार करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी शिक्षण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग था, जिससे विद्यार्थी प्रशासनिक सेवाओं के लिए सक्षम बन सकें। मूल्यांकन प्रणाली औपचारिक लिखित परीक्षाओं की अपेक्षा सतत एवं मौखिक मूल्यांकन पर आधारित थी। विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन उनके पाठ स्मरण, विषय की समझ, प्रश्नों के उत्तर, तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता तथा व्यवहारिक दक्षता के आधार पर किया जाता था। शिक्षक नियमित रूप से विद्यार्थियों से पाठ सुनते, कठिन विषयों पर चर्चा करते तथा उनकी त्रुटियों का तत्काल सुधार करते थे। किसी विशेष ग्रंथ या विषय में प्रवीणता प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी को अपने शिक्षक से मान्यता या इजाज़त प्राप्त होती थी, जो उस विषय के अध्ययन एवं अध्यापन की योग्यता का प्रमाण मानी जाती थी। यह प्रमाण-पत्र आधुनिक डिग्री प्रणाली के समान औपचारिक न होकर विद्वान शिक्षक की स्वीकृति पर आधारित होता था।

मुगलकालीन शिक्षण एवं मूल्यांकन प्रणाली की विशेषता यह थी कि इसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच घनिष्ठ शैक्षिक संबंध स्थापित होते थे। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं थी, बल्कि चरित्र निर्माण, अनुशासन, नैतिकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास पर भी समान रूप से बल दिया जाता था। यद्यपि इस व्यवस्था में लिखित परीक्षाओं एवं मानकीकृत मूल्यांकन का अभाव था, फिर भी व्यक्तिगत मार्गदर्शन, निरंतर अभ्यास तथा मौखिक परीक्षण के कारण विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता और विषयगत दक्षता का प्रभावी विकास होता था। मुगलकालीन शिक्षण विधियाँ एवं मूल्यांकन प्रणाली ने मध्यकालीन भारत में विद्वानों, प्रशासकों, न्यायविदों तथा साहित्यकारों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय शिक्षा परंपरा को समृद्ध बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

मुगलकालीन शिक्षा में फारसी, अरबी एवं भारतीय भाषाओं का योगदान

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था में भाषा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा का संपूर्ण ढाँचा मुख्यतः फारसी, अरबी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं पर आधारित था। इन भाषाओं ने न केवल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाया, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहित्य, प्रशासन तथा ज्ञान-विज्ञान के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुगल शासकों के संरक्षण में इन भाषाओं का परस्पर समन्वय हुआ, जिससे भारतीय समाज में सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा बौद्धिक विकास को नई दिशा प्राप्त हुई।

अरबी भाषा को इस्लामी धर्म एवं धार्मिक शिक्षा की मूल भाषा माना जाता था। मदरसों में कुरआन, हदीस, तफ़सीर, फ़िक़्ह, कलाम तथा इस्लामी दर्शन जैसे विषयों का अध्ययन मुख्यतः अरबी भाषा में कराया जाता था। धार्मिक विद्वानों, क़ाज़ियों तथा उलेमाओं के लिए अरबी का ज्ञान अनिवार्य समझा जाता था। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को इस्लामी धार्मिक ग्रंथों का मूल स्वरूप समझने का अवसर प्राप्त होता था तथा धार्मिक और नैतिक शिक्षा को मजबूत आधार मिलता था।

फारसी भाषा मुगल साम्राज्य की राजकीय एवं प्रशासनिक भाषा थी। प्रशासन, न्यायालय, राजस्व व्यवस्था, राजकीय पत्राचार तथा साहित्यिक गतिविधियों में फारसी का व्यापक उपयोग होता था। परिणामस्वरूप शिक्षा संस्थानों में फारसी का अध्ययन अत्यधिक महत्व रखता था। विद्यार्थियों को फारसी भाषा, व्याकरण, साहित्य, काव्य, इतिहास, पत्र-लेखन तथा अभिलेख-लेखन का प्रशिक्षण दिया जाता था। फारसी भाषा में दक्ष विद्यार्थी शासन-प्रशासन, न्यायिक सेवाओं तथा लेखन कार्यों में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करते थे। फारसी साहित्य के विकास के साथ-साथ अनेक भारतीय विद्वानों ने भी इस भाषा में उत्कृष्ट रचनाएँ प्रस्तुत कीं, जिससे भारतीय साहित्य का दायरा और अधिक विस्तृत हुआ।

मुगलकाल में भारतीय भाषाओं को भी पूर्णतः उपेक्षित नहीं किया गया। संस्कृत, हिंदी, ब्रजभाषा, अवधी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनी रहीं। विशेष रूप से सम्राट अकबर के शासनकाल में संस्कृत के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों जैसे महाभारत, रामायण, योगवाशिष्ठ तथा अथर्ववेद के कुछ अंश का फारसी में अनुवाद कराया गया। इसी प्रकार दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी अनुवाद कर भारतीय एवं इस्लामी दार्शनिक परंपराओं के मध्य बौद्धिक संवाद को प्रोत्साहित किया। इन अनुवादों ने विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया तथा भारतीय संस्कृति में समन्वय की भावना को सुदृढ़ किया।

फारसी, अरबी एवं भारतीय भाषाओं के पारस्परिक संपर्क का एक महत्वपूर्ण परिणाम उर्दू भाषा का विकास भी था। सैनिक शिविरों, नगरों तथा व्यापारिक केंद्रों में विभिन्न भाषाओं के मेल से विकसित उर्दू ने आगे चलकर साहित्य, कविता, संगीत तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम का रूप धारण किया। इसके साथ ही हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में फारसी और अरबी शब्दों का व्यापक समावेश हुआ, जिससे उनकी शब्द-संपदा और अभिव्यक्ति क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था में फारसी, अरबी एवं भारतीय भाषाओं का योगदान केवल भाषाई शिक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि इन भाषाओं ने ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, प्रशासन, दर्शन, धार्मिक अध्ययन तथा सांस्कृतिक समन्वय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन भाषाओं के माध्यम से भारतीय समाज में बहुभाषिकता, बौद्धिक उदारता तथा सांस्कृतिक सह-अस्तित्व की भावना विकसित हुई, जिसने भारतीय संस्कृति को समृद्ध एवं बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का भारतीय साहित्य एवं ज्ञान परंपरा पर प्रभाव

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय साहित्य एवं ज्ञान परंपरा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल में शिक्षा केवल धार्मिक शिक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, चिकित्सा, गणित तथा प्रशासनिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार का प्रभावी माध्यम भी बनी। मुगल शासकों द्वारा विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों एवं अनुवादकों को संरक्षण दिए जाने से भारतीय ज्ञान परंपरा को नई गति मिली। परिणामस्वरूप विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं ज्ञान परंपराओं के बीच संवाद स्थापित हुआ, जिसने भारतीय बौद्धिक जीवन को अधिक समृद्ध एवं व्यापक बनाया।

मुगलकाल में फारसी भाषा को राजकीय संरक्षण प्राप्त होने के कारण फारसी साहित्य का उल्लेखनीय विकास हुआ। अनेक विद्वानों ने इतिहास, जीवनी, काव्य, दर्शन तथा प्रशासन से संबंधित ग्रंथों की रचना की। अकबरनामा, आइने-अकबरी, तुज़ुक-ए-जहाँगीरी तथा बादशाहनामा जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ केवल राजनीतिक घटनाओं का विवरण नहीं देते, बल्कि तत्कालीन शिक्षा, समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था तथा प्रशासन के अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन ग्रंथों ने भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा को समृद्ध किया तथा ज्ञान के व्यवस्थित दस्तावेजीकरण की संस्कृति को विकसित किया।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण योगदान अनुवाद आंदोलन था। विशेष रूप से सम्राट अकबर ने संस्कृत, प्राकृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के महत्वपूर्ण ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराने के लिए एक विशेष अनुवाद विभाग की स्थापना की। महाभारत (रज़्मनामा), रामायण, योगवाशिष्ठ, पंचतंत्र, अथर्ववेद के कुछ अंश तथा अन्य दार्शनिक एवं धार्मिक ग्रंथों का फारसी अनुवाद कराया गया। बाद में दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी अनुवाद 'सिर्र-ए-अकबर' के नाम से करवाकर भारतीय एवं इस्लामी दार्शनिक विचारधाराओं के मध्य संवाद को सुदृढ़ किया। इन अनुवादों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यापक अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई तथा विभिन्न सभ्यताओं के बीच बौद्धिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया।

मुगलकालीन शिक्षा ने भारतीय भाषाओं एवं साहित्य के विकास को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन दिया। फारसी, अरबी और स्थानीय भाषाओं के संपर्क से हिंदी, ब्रजभाषा, अवधी, पंजाबी, बंगाली तथा विशेष रूप से उर्दू भाषा के साहित्य का विकास हुआ। इस काल में भक्ति और सूफी साहित्य ने जनसामान्य तक नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों का प्रसार किया। तुलसीदास, सूरदास, अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना, रसखान तथा अन्य अनेक कवियों की रचनाओं में भारतीय सांस्कृतिक समन्वय, धार्मिक सहिष्णुता और लोकजीवन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। इस प्रकार शिक्षा एवं साहित्य ने मिलकर समाज में ज्ञान, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ किया।

ज्ञान परंपरा के संरक्षण में पुस्तकालयों, मदरसों तथा शाही दरबारों का भी विशेष योगदान रहा। मुगल शासकों ने दुर्लभ पांडुलिपियों के संग्रह, प्रतिलिपि निर्माण तथा संरक्षण को प्रोत्साहित किया। विद्वानों के बीच अध्ययन, विमर्श, लेखन तथा शास्त्रीय चर्चाओं की समृद्ध परंपरा विकसित हुई। चिकित्सा, ज्योतिष, गणित, तर्कशास्त्र, दर्शन एवं इतिहास जैसे विषयों पर निरंतर अध्ययन और लेखन कार्य होता रहा, जिससे भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा को स्थायित्व मिला। शिक्षा संस्थानों में ग्रंथों के अध्ययन एवं व्याख्या की परंपरा ने बौद्धिक अनुशासन तथा आलोचनात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित किया।

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय साहित्य एवं ज्ञान परंपरा को बहुआयामी रूप से समृद्ध किया। इसने भाषाओं के विकास, साहित्यिक सृजन, ऐतिहासिक लेखन, अनुवाद परंपरा, पांडुलिपियों के संरक्षण तथा सांस्कृतिक समन्वय को नई दिशा प्रदान की। यद्यपि शिक्षा का मूल आधार धार्मिक एवं प्रशासनिक आवश्यकताएँ थीं, फिर भी इसका प्रभाव भारतीय बौद्धिक जीवन, साहित्यिक परंपरा और ज्ञान के संरक्षण एवं प्रसार पर अत्यंत व्यापक और दीर्घकालिक रहा। इसलिए भारतीय साहित्य एवं ज्ञान परंपरा के विकास में मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

निष्कर्ष

मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था भारतीय शिक्षा इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी रही है, जिसने भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य, प्रशासन तथा सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। इस काल में विकसित मकतब एवं मदरसा प्रणाली ने धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ साहित्य, तर्कशास्त्र, गणित, इतिहास, चिकित्सा एवं प्रशासनिक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फारसी भाषा के राजकीय संरक्षण ने भारतीय भाषाओं, साहित्य और प्रशासनिक व्यवस्था को नई दिशा प्रदान की तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुदृढ़ बनाया। अकबर तथा दारा शिकोह जैसे शासकों द्वारा भारतीय एवं इस्लामी ज्ञान परंपराओं के समन्वय के प्रयासों ने धार्मिक सहिष्णुता, बौद्धिक संवाद और सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहित किया। यद्यपि इस शिक्षा व्यवस्था की कुछ सीमाएँ थीं, जैसे शिक्षा का सीमित प्रसार एवं धार्मिक केंद्रीकरण, फिर भी इसके सकारात्मक प्रभाव अधिक व्यापक और दीर्घकालिक रहे। मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था ने भारतीय संस्कृति में बहुलतावाद, ज्ञान-विनिमय, भाषायी समृद्धि तथा सांस्कृतिक समन्वय की जो परंपरा स्थापित की, वह आधुनिक भारतीय समाज और शिक्षा व्यवस्था के विकास में भी प्रेरणास्रोत बनी हुई है। इसलिए मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक विरासत तथा शिक्षा के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

REFERENCES

Agrawal, A. (2021). Mughalkalin Shiksha Vyavastha aur Bharatiya Samaj (मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था और भारतीय समाज). Bharatiya Itihas Samiksha (भारतीय इतिहास समीक्षा), 28(2), 45–59.

Ali, S. (2020). Madhyakalin Bharat mein Shiksha evam Sanskritik Samanvay (मध्यकालीन भारत में शिक्षा एवं सांस्कृतिक समन्वय). Bharatiya Shiksha Shodh Patrika (भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका), 15(1), 78–91.

Chaudhary, R. (2019). Mughalkalin Shiksha Pranali ka Aitihasik Adhyayan (मुगलकालीन शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक अध्ययन). Itihas Darpan (इतिहास दर्पण), 24(3), 102–118.

Habib, I. (2018). Madhyakalin Bharat: Ek Aitihasik Adhyayan (मध्यकालीन भारत: एक ऐतिहासिक अध्ययन). Rajkamal Prakashan (राजकमल प्रकाशन).

Khan, M. (2022). Farsi Bhasha aur Mughalkalin Shiksha Vyavastha (फारसी भाषा और मुगलकालीन शिक्षा व्यवस्था). Bharatiya Bhasha evam Sanskriti Shodh Patrika (भारतीय भाषा एवं संस्कृति शोध पत्रिका), 19(2), 61–75.

Kumar, V. (2023). Mughalkalin Shiksha aur Bharatiya Sanskritik Virasat (मुगलकालीन शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत). Shodh Disha (शोध दिशा), 17(4), 84–99.

Mishra, S. (2021). Madhyakalin Bharat mein Maktab evam Madrasa Shiksha Pranali (मध्यकालीन भारत में मकतब एवं मदरसा शिक्षा प्रणाली). Shiksha Vimarsh (शिक्षा विमर्श), 12(2), 33–48.

Sharma, P. (2020). Bharatiya Sanskriti par Mughalkalin Shiksha ka Prabhav (भारतीय संस्कृति पर मुगलकालीन शिक्षा का प्रभाव). Bharatiya Sanskriti Adhyayan (भारतीय संस्कृति अध्ययन), 18(1), 56–70.

Singh, R. (2022). Mughalkalin Shiksha mein Arabi, Farsi evam Bharatiya Bhashaon ka Yogdan (मुगलकालीन शिक्षा में अरबी, फारसी एवं भारतीय भाषाओं का योगदान). Bhasha evam Sahitya Anusandhan Patrika (भाषा एवं साहित्य अनुसंधान पत्रिका), 14(3), 91–108.

Srivastava, D. (2019). Mughalkalin Shiksha ka Pathyakram evam Shikshan Paddhati (मुगलकालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं शिक्षण पद्धति). Shaikshik Anusandhan Patrika (शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका), 21(2), 120–136.